International Journal of Applied Research 2019; 5(5): 100-102

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2019; 5(5): 100-102
www.allresearchjournal.com
Received: 15-03-2019
Accepted: 18-04-2019

डॉ0 सन्दीप पान्डेय
श्री निवास,स्वर्गद्वार,अयोध्या
अयोध्या, उत्तर प्रदेश, भारत।

Correspondence
डॉ0 सन्दीप पान्डेय
श्री निवास,स्वर्गद्वार,अयोध्या
अयोध्या, उत्तर प्रदेश, भारत।

मूल्यपरक शिक्षाः वर्तमान समय की आवश्यकता

डॉ0 सन्दीप पान्डेय

प्रस्तावना

शिक्षा का मूल उद्देश्य 'शिक्षते उपादीयते विद्यामया सा शिक्षा' अर्थात् जिसके द्वारा ज्ञान उपादान किया जाए वह शिक्षा है। शिक्षा का मूल उद्देश्य व्यक्ति को एक अच्छा मनुष्य बनाना है जो श्रेष्ठ जीवन मूल्यों से युक्त हो, उसमें ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' की भावना तथा द्रुतगति से बदलते युग के साथ मानव कल्याण और उसके विकास हेतु सदा तत्पर रहने की क्षमता हो। मूल्य का विकास समाज में होता है। सामाजिक सम्पर्क के परिणामस्वरूप नैतिक विकास होता है। हम कुछ मूल्यों को प्राथमिकता देते है व कुछ अन्य मूल्यों को त्यागते है। मानव आचरण केवल विचारों द्वारा ही नहीं होता अपितु भावों से भी होता है। सिद्धान्तों को भावों द्वारा शक्ति मिलती है। स्थायी भावों के आधार पर ही मूल्यों का चयन करते है और उच्च मूल्यों के निरन्तर चुनाव करने से यह हमारा स्वभाव बन जाता है। हमारे व्यक्तित्व का अंग बन जाता है, हमारे चरित्र का निर्माण होता है। शिक्षा का उद्देश्य उच्च मूल्यों के विकास के द्वारा चरित्र का निर्माण करना है। मूल्य समाज को व्यवस्था देते है तथा व्यक्ति के व्यवहार की दिशा को आधार देते है। अच्छे चरित्र का आधार मूल्य है और आधुनिक युग मूल्यों के संकट का युग है। व्यक्ति के जीवन में ईमानदारी और सहनशीलता का क्षरण हुआ है। चारों ओर अपराध, हिंसा क्रूरता, लोभ, स्वार्थ और परोपकार का लोप दिखाई देता है। भौतिकता की चकाचौंध के कारण आध्यात्मिकता का लोप है, शहरीकरण की अंधी दौड़ के कारण पर्यावारण के प्रति उपेक्षा है। हमारा जीवन मूल्यवान होना चाहिए । मूल्यपरक शिक्षा एक व्यापक प्रक्रिया है और इसके माध्यम से व्यक्ति के व्यक्तित्व का समग्र और संतुलित विकास करना है। व्यक्ति का जीवन उसकी इच्छा कर्म और विचारों की त्रिवेणी में प्रवाहित होता है। व्यक्ति के कार्यों का आधार सत्य एवं अहिंसा, धैर्य और सहिष्णुता, मृदुता और करूणा, स्वावलम्बन और कर्तव्यनिष्ठा आदि वैयक्तिक मूल्य होने चाहिए। मूल्य परक शिक्षा की अवधारणा प्राचीन है। किंतु वर्तमान में मूल्य परक शिक्षा के नाम पर जो क्रियाएं–प्रतिक्रियाएं देखने को मिल रही हैं। उनसे लगता है कि देश, समाज और व्यक्ति असमंजस और डांवाडोल स्थिति में है। यह स्थिति क्यों हुई का विश्लेषण करें तो यह ज्ञात होता है कि मूल्य विहिनता को समाप्त करने के लिए हमने शिक्षार्थी को एक प्रयोगशाला के रूप में और शिक्षक को प्रयोगकर्ता के रूप में मान लिया। शिक्षा के महत्त्वपूर्ण घटक विद्यार्थी को विभिन्न प्रयोगों द्वारा मूल्यों के विकास का केन्द्र मान लिया। शिक्षा प्रदान करने वाले शिक्षाचार्यों ने भी शिक्षा देने के नाम पर केवल बौद्धिक व्यायाम या कोरा ज्ञान दिया है। जिससे शिक्षार्थी की बुद्धि का विकास तो हुआ पर संस्कार विकसित करने वाली मानसिकता का विकास नहीं हो पाया।

हमारे शिक्षालयों में पढ़ाने वालों की संख्या बहुत है परन्तु विद्या का दान करने वालों की संख्या नगण्य है। पढ़ाने वाले और विद्यादान करने वालों में व्यापक अन्तर है। एक केवल विषय को समझाकर ही रह जाता है और दूसरा उसका प्रयोग भी बतलाता है। जबकि वर्तमान में हमें विद्यार्थी को ऐसी शिक्षा देना है। जिससे वह कत्र्तव्य और अकत्र्तव्य के बीच अन्तर जानकर नैतिक और अनैतिक कार्यों की समीक्षा कर सकने की योग्यता उत्पन्न कर सके तथा संस्कार के अनुसार आचरण कर भविष्य निर्माण कर सके। किंतु वर्तमान शिक्षा ने विद्यार्थी को शाश्वत मूल्यों से नहीं जोड़ा और उन्हें मानसिक रूप से अपाहिज बना दिया। वर्तमान शिक्षा के नाम पर उन्हें सिर्फ कुछ भाषा, कुछ गणित, कुछ भूगोल, कुछ कैमिस्ट्री, कुछ फिजिक्स, इतिहास सिखाते हैं। किन्तु कभी सोचा है कि क्या हम उन्हें जीवन की कोई शिक्षा देते हैं ? क्या जीवन की कला सिखाते हैं ? क्या वर्तमान शिक्षा मानसिक परिपक्वता देती है। जीवन को विचारपूर्ण और मौलिकता देती है ? जी नहीं बिलकुल भी नहीं। हम आज तक विद्यालयों में जो शब्दों का ज्ञान ग्रहण करते आये हैं। अगर उसे शिक्षा कहते हैं तो उस शिक्षा का परिणाम ये है कि शिक्षार्थी आज अपनी ही समस्याओं से ग्रस्त होकर दिशाविहिन हमारे सामने खड़ा है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली वर्ग विषमता फैला रही है और देश के भावी भविष्य को स्वार्थी, अहंकारी, प्रतिस्पर्धी, महत्त्वाकांशी न्याय और अन्याय में सौदेबाजी करने वाला बना रही है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में दायित्व बोध की सोच को प्रमुखता देने की आवश्यकता

है। देश का भविष्य जो विद्यालयों में अपने भविष्य का निर्माण कर रहा है, उसका मानवता के प्रति, राष्ट्र के प्रति, समाज के प्रति, अर्थव्यवस्था के प्रति, शिक्षा के प्रति क्या दायित्व है ? ये दायित्व बोध अगर हमने उनमें जगा दिया तो शिक्षा का अर्थ सार्थक हो जायेगा और यही दायित्व बोध मानव मूल्यों की शिक्षा होगी और यही हमारी शिक्षा का दर्शन भी है।

शिक्षा समाज का दर्पण है और मूल्य उसके प्रतिबिम्ब। समाज में प्रचलित मूल्य शिक्षा को आधार प्रदान करते हैं। यदि किसी राष्ट्र को पूरे विश्व में अपनी अच्छी पहचान बनानी हो तो उस राष्ट्र के उद्देश्य, आदर्श व मूल्यों का परिपूर्ण होना अत्यन्त आवश्यक होता है। इसके लिए शिक्षा एक ऐसा प्रभावी माध्यम है जो एक राष्ट्र के उद्देश्य, आदर्श और मूल्यों को एक आइने की तरह दर्शाता है। शिक्षा व्यवस्था में शिक्षक व छात्र दो प्रमुख घटक है जो समाज में हितकारी परिवर्तन ला सकते हैं। ये भारतीय शिक्षा व्यवस्था में नये विचार, नये दृष्टिकोण, नये मूल्यों को स्थापित कर देश के भविष्य को उज्जवल बना सकते हैं। प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में मूल्यों के आधार पर यह निश्चित करता है कि उसे किस प्रकार से जीवन आगे बढ़ाना चाहिये क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में अपने अलग–अलग मूल्य होते हैं, और वह उसी के अनुसार अपने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में कार्य करता है।

वर्तमान में शिक्षा में मानव मूल्यों को बढ़ाने वाली भारी भरकम शब्दावली का बोझ तो लिए हुए है किन्तु मूल्य परक शिक्षा को नैतिक शिक्षा मानकर मूल्य परक शिक्षा की मूल अवधारणा से हटकर मात्र उपदेशात्मकता द्वारा मूल्यों के विकास की दुहाई देते हैं। मूल्यपरक शिक्षा का आशय कदापि नहीं है कि नैतिक शिक्षा की तरह पाठ्यपुस्तकं तैयार कर कालांश निर्धारित कर शिक्षण अधिगम की व्यवस्था की जाए। जैसा कि हम वर्षों से नैतिक एवं आध्यात्मिक शिक्षा के लिए उपक्रम करते आए हैं। उसकी आवृत्ति करना मूल्यपरक शिक्षा की संकल्पना को आघात पहुँचना होगा अर्थात मूल्यों का संबंध भावनात्मक परिवर्तन से है, न कि किताबी दृष्टांतों से। सिद्धान्त और व्यवहार चितंन प्रक्रिया को आगे बढ़ा सकते हैं, इससे निश्चित ही परिवर्तन आयेगा। जीवन की सफलता का आधार मूलतः शिक्षा में ही निहित है क्योंकि शिक्षा व्यक्ति को समाज में अपनी भूमिका अधिक दक्षता से अदा करने की क्षमता प्रदान करती है। समय के साथ साथ शिक्षा के उद्देश्य भी बदलते रहे हैं एक और तो शिक्षा को व्यावसायोन्मुखी बनाने का प्रयास किया जा रहा है, उत्तम सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण व हस्तांतरण पर भी ध्यान दिया जा रहा है परंतु दूसरी ओर सार्वजनिक जीवन में नैतिकता व सामाजिक मूल्यों के ह्रास के प्रति ध्यान आकर्षित नहीं किया जा रहा है। जब से देश स्वतंत्र हुआ है कई समितियों तथा शिक्षा आयोगों ने शिक्षा के विभिन्न पहलुओं पर विचार मंथन किया है और मूल्यपरक शिक्षा की आवश्यकता पर बल दिया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में भी कहा गया है कि समाज में अनिवार्य मूल्यों में निरंतर कमी तथा बढ़ती हुई स्वेच्छाचारिता के कारण पाठ्यक्रम में परिवर्तन आवश्यक हो गया है, ताकि शिक्षा के माध्यम से सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों को विकसित किया जा सके। अतः नैतिक, आध्यात्मिक, एवं मानवीय मूल्यों के विकास में शिक्षा को विशेष भूमिका निभानी है, लेकिन मूल्य परक शिक्षा के क्षेत्र में प्रभावशाली कार्य के लिए यह जानना आवश्वयक है कि मूल्य परक शिक्षा क्यों, किसे और किस प्रकार दी जा सकती है। मूल्य का संबंध उन बातों से है, जिन्हें हम समाज मे उचित मानते हैं या मानव अस्तित्व में महत्वपूर्ण वस्तु का प्रतिनिधित्व करते हैं। रथ के अनुसार "मूल्य तीन प्रक्रियाओं पर आधारित होता है– 1–चयन करना, 2–महत्व देना तथा 3– क्रिया करना"।

मूल्य एक प्रकार का मानक है। मनुष्य किसी वस्तु, क्रिया या विचार को अपनाने से पूर्व यह निर्णय करता है कि वह उसे अपनाए या त्याग दे। जब ऐसा विचार भाव व्यक्ति के मन में निर्णयात्मक ढंग से आता है, तो वह मूल्य कहलाता है। मूल्यों की परिभाषा के आधार पर मूल्यों की विशेषताएँ निम्न हैं –

1. मूल्य अहम (मैं) से वयम् (हम) अर्थात् मैं से आगे परिवार, समाज, राष्ट्र विश्व तक पहुँचने के मार्ग के पथ प्रदर्शक हैं।
2. हम जिन गुणों को सामान्य व्यवहार में वरीयता देते हैं वे मूल्य हैं।
3. मूल्यों को व्यक्ति तथा समाज पाने की चेष्टा करते हैं।
4. मूल्य वे मानदण्ड है जिनके द्वारा ध्येय निर्धारित किया जाता है।
5. मूल्य वह व्यवहार है जिसके द्वारा व्यक्ति अच्छे व बुरे कर्मों की पहचान कर एक जिम्मेदार नागरिक बन सकता है।
6. मूल्य हर एक व्यक्ति को उसके कार्यों में मार्गदर्शन करते हैं तथा जो सभी परिस्थितियों में एक समान होते हैं।

इस प्रकार मूल्य किसी वस्तु या स्थिति का वह गुण है, जो समालोचना व वरीयता प्रकट करता है। यह एक आदर्श है, जिसे पूरा करने के लिए व्यक्ति जीता है तथा आजीवन प्रयास करता है। प्रत्येक व्यक्ति अनेक विकल्पों में से कुछ विकल्पों को उनके परिणामों के आधार पर चुनता है तथा चयन के आधार पर क्रिया करता है, ये क्रियाएं ही सामूहिक रूप से मूल्य निर्धारण करती हैं और समाज का अभिन्न अंग बन जाती है। दरअसल शिक्षा वह प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से बच्चों में ऐसे विशेष गुणों, दृष्टिकोणों, सामाजिक मूल्यों तथा व्यवहारों का विकास किया जा सकता है, जो उनके लिए एवं समाज के लिए हितकारी है। शिक्षा के विभिन्न उद्देश्य और लक्ष्य मानव संसाधनों का विकास, मानवीय मूल्यों के प्रति निष्ठा, सामाजिक न्याय, राष्ट्रीय एकता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास, मानसिक एवं आध्यात्मिक स्वतन्त्रता, समाजवाद, धर्म निरपेक्षता आदि अच्छे जीवन के सिद्धांत हैं। शिक्षा के माध्यम से इन सिद्धांतों को पीढ़ी दर पीढ़ी प्रेषित किया जा सकता है तथा मानव समाज इसी प्रकार अपने मूल्यों को धरोहर की तरह सुरक्षित रखता है, उन्हें आगे बढ़ाता है। इसी दृष्टिकोण से शिक्षा के सन्मुख यह चुनौती है कि मूल्य परक शिक्षा हेतु न केवल उपयुक्त प्रशिक्षण दें, वरन सबसे अधिक उपयोगी परिस्थितियों का निर्माण भी करें।

शिक्षाविद मानते हैं कि समाज में बालक के चरित्र का निर्माण एकाकी जीवन व्यतीत करने से नहीं, वरन दूसरों के संपर्क में आने से होता है। अतः सामाजिक क्रियाकलापों का आयोजन कर बालक को इनमें भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों में सद्गुणों का विकास करके मानव समाज अपने मूल्यों को अधिक सुरक्षित रखता है और आगे भी बढ़ाता है। तभी तो विद्वान कहते हैं कि मनुष्य अच्छे गुणों का जितना अधिक संगठन करता है उतना ही अधिक वह अपने चरित्र की अभिव्यक्ति करता है।

मूल्य परक शिक्षा के विकास में विद्यालयों में दी जाने वाली शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान यह है कि बच्चों को न सिर्फ मूल्यों की शिक्षा दी जाती है बल्कि उनपर अमल करना भी सिखाया जाता है। मूल्य परक शिक्षा हेतु विभिन्न कक्षाओं के लिए अलग से पाठ्यक्रम तैयार करना अत्यंत दुरूह कार्य है, इसके लिए कुछ सिद्धांतों को ध्यान में रखना अति आवश्यक है, जैसे –

1. सर्वप्रथम यह ध्यान रखना आवश्यक है कि बच्चों को सही मूल्यों, सही विचारों, तथा सही कार्यों से अवगत कराना है, क्योंकि मूल्य परक शिक्षा बच्चों के व्यक्तित्व के तीनों पक्षों, यथा– सीखना, अनुभव, एवं व्यवहार का विकास करती है।
2. मूल्य परक शिक्षा बच्चों की मनोवैज्ञानिक प्रवृत्ति को निजी अनुभव से जोड़ती है, अतः कुछ गुण बच्चों में आदत के रूप में ढालने चाहिए, जैसे दृ स्वच्छता, समय पर कार्य करना, सत्य बोलना इत्यादि।
3. मूल्यों की शिक्षा व मूल्य परक गतिविधियां बच्चे की उम्र तथा कक्षा के स्तर के अनुरूप होनी चाहिए।

आरंभिक स्तर पर मूल्य परक शिक्षा जीवन के अनुभवों व परिस्थितियों के अनुरूप होनी चाहिए क्योंकि जब बच्चा बड़ा होता है तो वह मूल्यों को अपने विचारों के अनुरूप ढाल लेता है। विद्यालयी विषयों के अध्यापन को मूल्यों की शिक्षा से संबंध करके मूल्यों को विकसित एवं संरक्षित रखने की आवश्यकता है। इसके लिए उपयुक्त शिक्षण सामग्री के विकास हेतु सम्पूर्ण विद्यालयी पाठ्यक्रम में परिवर्तन अपेक्षित है। विद्यार्थियों तक वांछित गुणों के सम्प्रेषण विद्यालयी वातावरण में सुधार कर शिक्षण में विभिन्न मूल्यों को आत्मसात करने के सक्रिय अवसर कराये जा सकते हैं। विद्यालय में मूल्यपरक शिक्षा के उद्देश्य निम्नलिखित होने चाहिए–

1. बच्चों में नैतिक व आध्यात्मिक भावनाएं विकसित करना।
2. बच्चों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण व अभिवृत्ति जागृत करना।
3. बच्चों में विभिन्न मूल्यों के प्रति निष्ठा उत्पन्न करना।
4. मूल्यों को जीवन में उतारने हेतु अवसर प्रदान करना।

वास्तव में मूल्यों की शिक्षा बच्चों के घर से शुरू होती है जब वह अपने माता–पिता के व्यवहार को देखते हैं और उनका अनुकरण करते हैं तभी से मूल्यपरक शिक्षा की शुरुआत होती है। इसीलिए परिवार को शिक्षा की प्राथमिक संस्था कहा गया है। परिवार ही वह स्थान है जहां महान गुण उत्पन्न होते हैं, प्रेम का विकास होता है, न्याय और अन्याय, सत्य और असत्य, परिश्रम और आलस में अंतर करके बालक अच्छी आदतें ग्रहण करता है।

परिवार में अधिगम की परिस्थितियों के प्रति बच्चे अधिक संवेदनशील होते हैं तथा परिवार में सीखी गई सामाजिक बातें जीवन पर्यंत स्थाई रहती हैं। यह बातें बाद में खेल के मैदान, विद्यालय, समुदायों के अनुभवों से रूपांतरित होती हैं। मूल्यों को आत्मसात करने की भावना को जागृत करना मूल्य विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। छात्रों व अध्यापकों में मूल्यों का विकास करके शिक्षा की नींव को मजबूत बनाया जा सकता है, क्योंकि यही लोग देश का भविष्य तैयार करते हैं। मृदुला शर्मा (1995) ने ''विचारधारा मूल्य और शिक्षा के पारस्परिक संबंध'' का अध्ययन कर पाया कि, ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में विचारधारा, मूल्य और शिक्षा को रखकर इनके परस्पर संबंधों को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। विचारधाराओं की एक विशेषता यह होती है कि वह बहुत सारे वस्तुओं के बारे में बहुत अधिक स्पष्ट होती है। समाज अपने विशेष सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों से ही जाना जाता है। ये मूल्य उस समाज के सदस्यों के जीवन में आचरण के सामाजिक सांस्कृतिक मानदण्डों के आधार पर बनते है। शिक्षा से व्यक्ति के चरित्र और व्यक्तित्व का विकास करने के अलावा उसके भौतिक कल्याण की आशा भी की जाती हैं। जीवन संबंधी विभिन्न दृष्टिकोण जैसे– भौतिकवादी, उपयोगितावादी, मानवतावादी, अलंकारिक दृष्टिकोण शिक्षा को अलग–अलग महत्व देते है। अतः विचारधारा और मूल्यपरक शिक्षा परस्पर संबंध प्रक्रिया के अधीन है और समग्रता के साथ ही इनका अस्तित्व है। सुमित्रा सिंह (2005) ने ''सामाजिक मूल्यों संस्थाओं और परम्पराओं पर भूममंडलीकरण का प्रभाव'' का अध्ययन कर यह पाया कि, वैश्वीकरण ने थोडे से प्रभुतासम्पंन्न एवं अति उच्च वर्ग के प्रत्येक स्तर में परिवर्तन करके सामान्य वर्ग एवं समाज के दृष्टिकोण को बदलने में बहुत हद तक सफलता दिखाई है। कम से कम जन–सामान्य के लिए भविष्य की एक ऐसी कल्पना विकसित की है। जिसके परिणाम स्वरूप कतिपय विरोधाभास तो रहेगें, परन्तु उसके अधिकतम लाभ भी संभवतः सर्वाधिक सुरक्षित रह सकेंगे। गोपाल प्रसाद नायक (2009) ने ''मूल्यों के विकास में शिक्षण संस्थानों की भूमिका'' का अध्ययन कर यह पाया कि, मूल्यों सीख तथा आदर्श प्रस्तुति में घनिष्ठ सम्बन्ध है। एक बार दिखाना–सौ बार कहने के बराबर माना जाता है। शिक्षक द्वारा प्रस्तुत आदर्श प्रस्तुति से छात्रों में मूल्य में आत्मसात सहज ढंग से हो सकता है। क्योंकि बालक के अनुकरण की मनोवृत्ति जन्मजात होती हैं, इस प्रकार स्पष्ट हैं कि मूल्यों के विकास में शिक्षण संस्थानों की अहम भूमिका है। सुमित्रा सिंह, मैथिलीरमण प्रसाद सिंह (2009) ने ''वर्तमान शिक्षा के मूल्य,संकट ,कारण एवं सुझाव'' का अध्ययन कर यह पाया कि, यह सर्वविदित हैं कि जब–जब मूल्यों से जुड़ने का प्रयास किसी समुदाय या समाज के व्यक्ति ने किया वह सामान्य मनुष्य की परिधि से उठकर महामानव की श्रेणी में जा पहुंचा तथा समाज एवं विश्व में नई दिशा प्राप्त की।

फैंकल कहते हैं– "मूल्य, आचार्य, सौंदर्य, कुशलता वे मापदंड हैं, जिनका लोग संवर्धन करते हैं, जिनके साथ वे जीते हैं और दूसरों को हस्तांतरित करते हैं"। अस्तु आज की परिस्थितियों में समाज के सभी सदस्यों में मानवीय मूल्यों को जागृत करने की आवश्यकता है। इसके लिए मूल्य शिक्षा अति आवश्यक है। शिक्षा आयोग (1948–49) में उल्लिखित हैः "यदि हम अपने को सभ्य मानते हैं, तो हमे असहायों तथा दुखियों के प्रति सहानभूति, स्त्रियों की मर्यादा की रक्षा, देश, घर, जाति, रंग से परे मानवता भाईचारा, शांति एवं स्वतंत्रता के प्रति प्रेम, नृशंसता के प्रति घृणा तथा न्याय के प्रति सतत लगाव होना चाहिए"।

मूल्य शिक्षा की आवश्यकता का अनुभव करते हुये कोठारी आयोग (1964– 66) तथा 1983 में गठित बेसिक शिक्षा वर्धा योजना से लेकर राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) तक सभी आयोगों के प्रतिवेदनों और अनुशंसाओं में किसी न किसी रूप में मूल्यपरक शिक्षा पर बल दिया है। शिक्षा आयोग ने मूल्यों के विकास में विद्यालय व शिक्षकों की भूमिका को स्पष्ट करते हुए लिखा है कि विद्यालय का वातावरण, अध्यापकों का व्यक्तित्व एवं व्यवहार तथा विद्यालय में उपलब्ध भौतिक सुविधाओ का छात्रों को मूल्योन्मुख बनाने में विशेष योगदान है। 1996 में एस. पी. चव्हाण की अध्यक्षता में गठित समिति ने भी मूल्य आधारित शिक्षा और तदनुसार पाठ्यक्रम बनाने की आवश्यकता पर जोर दिया। अतः शिक्षा के माध्यम से शिक्षकों द्वारा यह प्रयास किया जाना चाहिए कि वांछित उच्चतम मूल्यों का विकास हो सके और यह तभी संभव है जब शिक्षक में स्वयं व्यक्तिगत मूल्य हों। इस प्रकार मूल्यों को न केवल शिक्षण द्वारा ही विकसित किया जा सकता है, बल्कि मूल्यों को विकसित करने के लिए यह भी आवश्यक है कि व्यक्ति मूल्य जागृत वातावरण में रहे। मूल्य चेतना को विकसित करना मूल्यों के विकास की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। नैतिकता अथवा चरित्र बाजार में तैयार नही बिकते, इन्हें प्रतिदिन थोड़ा थोड़ा संचित करना पड़ता है।

संदर्भः

1. अदावल, एस.बी. एवं एम. उनियालय भारतीय शिक्षा की समस्याएं तथा प्रवृत्तियां। लखनऊ उ.प्र. हिंदी ग्रंथ अकादमी, 1975।
2. पाण्डेय राम शकल मूल्य शिक्षा। मेरठः आर. लाल. बुक डिपो।
3. पाण्डेय गोविंद मूल्य मीमांसा। जयपुरय राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, 1973।
4. भारत सरकार शिक्षा आयोग रिपोर्ट। नई दिल्लीय 1964–66।
5. नायक, गोपाल प्रसाद (2009), मूल्यों के विकास में शिक्षण स ंस्थानों की भूमिका, परिपेक्ष्य–16, अंक–3, दिसम्बर 2009
6. पासी, बी.के.एवं सि ंह,पी (2009), वैल्यू एजूकेशन, एन.पी.सी., आगरा।
7. रूहेला, एस.पी. (2012), डायमेंशन ऑफ वैल्यू एजूकेशन, आगरा,एच.पी.भार्गव बुक हाऊस
8. सुमित्रासिंह, मैथिलीरमण (2009), वत ंमान शिक्षा के मूल्य संकट,कारण एव ं सुझाव,
9. साहनी, मधु (2009), माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के मूल्यों का अध्ययन,
10. मृदुला शर्मा (1995) विचाराधारा मूल्य और शिक्षा का पारस्परिक सम्बन्ध, परिप्रेक्ष्य, वर्ष 2
11. डॉ. गोविन्द प्रसाद शर्मा – ''उत्तर प्रौद्योगिकी काल और मूल्य आधारित शिक्षा''